International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 13-16

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 13-16
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-11-2020
Accepted: 19-12-2020

डॉ. कल्पना कुमारी
वनस्पति विज्ञान विभाग, कालिंदी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कल्पना कुमारी
वनस्पति विज्ञान विभाग, कालिंदी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

वेदों में वनस्पति विज्ञान'—औषधि पौधों के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. कल्पना कुमारी

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2021.v7.i1a.1262

सारांशः
भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण है।भारत में ही नहीं अपितु विश्व के प्राचीनतम ग्रंथों तथा भारतीय संस्कृति के प्राणभूत वेद प्रकृति में सम्पूर्ण ज्ञान की आधारशिला माने गए हैं । वेद के चार विभाग हैः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेद मानव सभ्यता के लगभग सबसे पुराने लिखित दस्तावेज हैं।वेदों में आयुर्वेद से सम्बन्धित सैकड़ों मन्त्रों का वर्णन है, जिसमें विभिन्न रोगों की चिकित्सा का उल्लेख है। वनस्पतियां हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं।विभिन्न औषधीय पौधे जो आज भी रोगों के उचार में उपयोग में लाये जाते हैं उन सबका विवरण वेदों में है। हमारा प्राचीन वैदिक ज्ञान बहुत ही समृद्ध है। विभिन्न औषधीय पौधों का वर्णन विभिन्न रोगों के सन्दर्भ में है। वनस्पतियां हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं।प्रकृति और व्यक्ति के जीवन में संतुलन के लिए पौधों का होना आवश्यक है।

मुख्य शब्दः वेद, वनस्पति, ओषधि

प्रस्तावना
वनस्पतियों में हरे रंग का क्लोरोफिल होता हैं जिससे यह सूर्य की रोशनी, जल और कार्बन डाइ ऑक्साइड की सहायता से अपना भोजन बना सकता है। यही भोजन जीव जगत की ऊर्जा का आधार है। वनस्पतियों से हमें लकड़ी, ऊर्जा. भोजन,ओषधि इत्यादि प्राप्त होते हैं। हमारा पर्यावरण और हम वनस्पतियों के बिना इस पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकते हैं। संस्कृत साहित्य में वृक्षों को देवता की उपाधि दी गयी है। शायद इससे अच्छा विशेषण और है भी नहीं। वृक्षों ने अपने लिए कदाचित कुछ नहीं चाहा तथा जो भी उनके पास होता है उसे वे मनुष्यों तथा पर्यावरण के हित में लगा देते हैं।

छायामन्यस्य कुर्वती स्वयं तिष्ठन्ति चातपे।
फलन्ति ही परार्थे च सत्येते महाद्रुमाः ॥

वेदों में वनस्पतियों की बहुप्रकारीय उपयोगिता के कारण उन्हें देव तुल्य माना गया है। यजुर्वेद में ओषधि रूप में वनस्पति को नमन किया गया है ।
नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमःश्रवाय च प्रतिश्रवाय च नमः आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च॥१६.३४
वन के वृक्षादि में स्थित घास आदि (ओषधि रूप) में स्थित देव को नमन है ।
यजुर्वेद के मन्त्रों में वृक्षों, वनस्पतियों एवं वनों के पालकों को नमस्कार करते हुए कुत्स ऋषि के द्वारा उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त की गयी है ।
नमो वृक्षेभ्यो। वनानां पतये नमः। ओषधीनां पतये नमः ।वृक्षाणां पतये नमः।अरण्यानां पतये नमः।नमःवन्याय च।१६.१८,१६,२०,३४
अथर्ववेद में वनस्पतियों को सखा कहा गया है।मानव मात्र को प्राणवायु प्रदान करने के कारण ऐतरेयोपनिषद का वनस्पतियों के सन्दर्भ में मत है की 'प्राणो वै वनस्पतिः।२.१
यजुर्वेद वनस्पति विज्ञान का जनक है। इसमें पौधों का वर्गीकरण किया गया है :—

याः फलिनीर्याऽफलाऽपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः॥ १२.८६

पौधों को दो भागों में विभक्त किया गया है अपुष्प और पुष्पिणी।पुष्पिणी अर्थात फूलों वाले पौधों को भी दो भागों में विभक्त किया गया है अफला (बिना फल वाले) और फलिनी (फल वाले)। यजुर्वेद में पौधों में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया का विवरण भी मिलता है । वनस्पतियों के लिए जल और ऊर्जा के महत्व को दर्शाया गया है ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूषणो हस्ताभ्याम् ।
सं वपामि समापऽ ओषधिभिः समोषधयो रसेन।
सं रेवतिर्जगतीभिः पृच्यनतासं मधुमतिर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम।१.२१

सविता द्वारा उत्पन्न प्रकाश में अश्विनीदेव (रोग निवारक शक्तियों) के हाथों से आपको विस्तार दिया जाता है। ओषधियों को जल प्राप्त हो, वे रस से पुष्ट हों। गुण–सम्पन्न ओषधियाँ प्रवाहमान जल से मिलें। मधुरतायुक्त तत्व परस्पर मिल जाएँ ।
यजुर्वेद में कहा गया है, हे अग्निदेव आप धन के साथ वापस आएं और संसार के उपयोग के लिए श्रेष्ठ पवित्र जलधारा से ओषधियों,वनस्पतियों आदि सभी को अभिषिक्त करें।

सह रय्या निवर्तस्वग्ने पिन्वस्व धारया।
विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि ॥१२.१०

ऋग्वेद के मंडल ३, सूक्त ८ के देवता वनस्पतिदेव हैं। इस सूक्त में पौधों की उन्नत किस्में वनस्पति शास्त्री द्वारा विकसित करने का भाव प्रकट होता है।

युवा सुवासाः परिवीत आगात्स श्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥३.८

उत्तम वस्त्रों में लपेटे हुए वे तरुण (वनस्पतिदेव –पुष्ट पौधे) आ गए हैं। ये जन्म से ही उत्तम होते हैं। देवत्व की कामना वाले मेघावी, अध्ययनशील, दूरदर्शी, विवेकवान पुरुष मनोयोगपूर्वक इनकी उन्नति करते हैं।

वेदों में रोग निवारक (ओषधि) वनस्पतियांः–

वेदों में औषधीय पौधों का विवरण विभिन्न रोगों की चिकित्सा के सन्दर्भ में मिलता है। ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है कि स्वर्ग से नीचे उतरती हुए वनस्पतियों ने कहा कि जिस तक हम पहुँच जाती हैं उसका नाश नहीं होता है।ऋग्वेद के मनीषियों ने एक शक्तिवर्धक वनस्पति प्रदत्ता के रूप में सोम देव का स्मरण किया है ।सोम एक विशेष प्रकार का रस होता है जिसे देवताओं को अर्पित कर पान किया जाता है ।सोमरस विशिष्ट प्रकार की विधियों द्वारा तैयार किया जाता है ।सोम देव से प्राप्त विशिष्ट सोम रस से हमें उत्तम बुद्धि,उत्तम अध्ययन क्षमता एवं स्वादिष्ट अन्न प्राप्त होते हैं। सोम देवताओं के लिए अमरत्व ओषधि है संभवतः वैदिक ऋषि इसी अमरत्व की प्राप्ति हेतु उसकी उपासना करते हैं ।सोम रस का पान हमारे शरीर को बलिष्ठ बनाकर रोगाणु के प्रवेश से मुक्त रखता है और हमें दीर्घायु प्रदान करता है ।
यजुर्वेद में ओषधियों के विभिन्न ऋतुओं में उत्पन्न होने का उल्लेख है :–

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं श्वामानि सप्त च॥१२.७५

सृष्टि के आरम्भ में जो ओषधियाँ देवताओं द्वारा वसंत, वर्षा, शरद इन तीन ऋतुओं में उत्पन्न हुई हैं,पककर पीत वर्ण से युक्त उन सैकड़ों ओषधियों और सप्त धान्यों का ज्ञान हममें है।

यजुर्वेद में वनस्पतियों का ओषधि रूप में वर्णन है ।

सविता त्वा सवानां सुवतामग्निगृहपतीनां सोमो वनस्पतीनाम् ।६.३६
अथर्ववेद काण्ड ६ के शत्रुनिवारण सूक्त के प्रथम मन्त्र में :–
हे वनस्पते) आप ओषधियों में श्रेष्ठ हैं,अन्य वृक्ष तेरे अनुगामी हैं, जो रोग हम पर आधिपत्य जमाना चाहते हैं,वे हमारे अधीन हो जाएँ। केमिकल्स से बनायी गयी ओषधियों की अपेक्षा वनस्पतिजन्य ओषधियाँ शरीर में अधिक स्वाभाविकता और सहजता से स्थापित हो जाती हैं, इसलिए इन्हें ओषधियों में उत्तम कहना उचित है ।

उत्तमो अस्योषधीनां तव वृक्ष व उपस्तयः ।
उपस्तिस्तु सोऽस्माकं यो अस्मां अभिदासति॥६.१५.१

यजुर्वेद में ओषधियों को माता कहा गया है। वृक्ष संसार की रक्षा करते हैं और उसे प्राणवायु (ऑक्सीजन) रुपी दूध पिलाते हैं। अतः उन्हें माता कहा गया है।

ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरूप ब्रुवे।
स्नेयमश्वं गां वास आत्मानं तव पूरुष॥१२.७७

यजुर्वेद में वृक्षों को दुष्प्रभावों का शमन करने वाला कहा गया है।
वनस्पतिः शमिता ।२१.२१
वनस्पतिः शमितारम्। २८.१०
अथर्ववेद में ओषधियों के उत्पत्ति स्थान का भी वर्णन है–

या रोहिन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च।
ता नः पयस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृर्दे॥८.७.१७

अर्थात अङ्गिरस ऋषि के द्वारा जानी गई और प्रयुक्त जो ओषधियाँ पर्वतों एवं समतल स्थानों पर उगती हैं, वे रसवती ओषधियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों और हमारे हृदय के लिए शान्तिदायिनी हों

१) तुलसी

तुलसी एक औषधीय पौधा है। इसका प्रयोग कफजन्य रोगों को दूर करने में होता है। तुलसी के औषधीय गुणों का विवरण कुष्ठ रोग को ठीक करने में दिया गया है। अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के श्वेत कुष्ठ नाशन सूक्त के प्रथम तथा तीसरे मन्त्र में तुलसी का विवरण है।

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नी च।
इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत॥

हे रामा –कृष्णा तथा असिक्नी ओषधियों आप सब रात्रि में पैदा हुई हैं। रंग प्रदान करने वाली हे ओषधियों! आप गलित कुष्ठ तथा श्वेत कुष्ठ ग्रस्त व्यक्ति को रंग प्रदान करें। धन्वन्तरि के अनुसार रामा से रामा तुलसी,कृष्णा से कृष्णा तुलसी,कृष्णमूली,पुनर्नवा,पिप्पली आदि का बोध होता है।

असितं ते प्रलयनमास्थानमसितं तव।
असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत॥१.२३.३

हे नील ओषधे आपके पैदा होने का स्थान कृष्ण वर्ण है तथा जिस पात्र में आप स्थित रहती हैं,वह भी काला है। हे औषधे आप स्वयं श्याम वर्ण वाली हैं,इसलिए लेपन आदि के द्वारा इस रोगी के कुष्ठ आदि धब्बों को नष्ट कर दें।

अथर्ववेद के कांड १ के २४ वें सूक्त के चौथे मन्त्र में श्यामा सरूपंगकरणी पृथिव्या अध्युद्भूता ।
इदमू षु प्र साधय पुना रूपाणी कल्पय ॥

हे काले रंग वाली ओषधे। आप समान रूप बनाने वाली हो।आप इस कुष्ठ रोग ग्रस्त अंग को भली प्रकार रोगमुक्त करके पूर्ववत सांवला बना दें ।

२) अर्जुन की छाल

अथर्ववेद के दूसरे काण्ड में क्षेत्रीयरोगनाशन सूक्त के तीसरे मन्त्र में:–

बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिञ्ज्या।
विरुत क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु॥

भूरे और सफेद रंग वाले अर्जुन की लकड़ी, जौ की बाल तथा तिल की मंजरी व्याधि को विनष्ट करें। आनुवांशिक रोग को विनष्ट करनेवाली यह वनस्पति इस रोग से विमुक्त करे। अर्जुन की छाल, जौ, तिल आदि का प्रयोग औषधि अनुपान या पथ्यादि के रूप में करने का संकेत प्रतीत होता है।

३) पीपल एवं खैर

अथर्ववेद के काण्ड ३ के शत्रुनाशन सूक्त में :–

पुमान् पुंसः परिजातोऽश्वत्थः खदिरादधि।
स हन्तु शत्रून् मामकान् यानहं द्वेष्मि ये च माम् ॥

वीर्यवान (पराक्रमी) से वीर्यवान की उत्पत्ति होती है। उसी प्रकार खदिर (खैर वृक्ष या आकाश से आपूर्ति करने वाले चक्र) के अंदर स्थापित अश्वत्थ (पीपल अथवा विश्ववृक्ष) उत्पन्न हुआ है। वह अश्वत्थ उन शत्रुओं को नष्ट करे, जो हमसे द्वेष करते हैं तथा हम जिनसे द्वेष करते हैं। आयुर्वेद में खदिर तथा पीपल दोनों वृक्ष रोग निवारक है। खदिर में उत्पन्न पीपल के विशेष गुणों के उपयोग की बात कहा जाना उचित है।जीवन तत्व की आपूर्ति का आधार आकाश में उपलब्ध इष्ट सूक्ष्म प्रवाह है। यह अविनाशी जीवनतत्व हमारे विकारों को नष्ट करनेवाला है। यह कामना ऋषि द्वारा की गयी है।

यत्राश्वत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः ।
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ॥ ४.३७.४

हे अप्सराओं (जल में फैलने वाले कृमियों) जहाँ पर पीपल,वट और पिलखन आदि महान वृक्ष होते हैं, वहां से आप अपने स्थान में लौट जाएँ और गतिहीन होकर पड़ी रहे। पीपल को संस्कृत में 'शुचिद्रुम' (शुद्ध करने वाला) भी कहते हैं। यह रोगाणु निवारक होने के साथ ही दिन–रात ऑक्सीजन छोड़कर वायु को शुद्ध करने वाला हैस

४) रोहिणी वनस्पति

पूर्वकाल में युद्ध के समय वैद्यगण रातभर में योद्धाओं के घावों का उपचार करके,उन्हें फिर से युद्ध के योग्य बना देते थे। उस समय दिव्य ओषधि प्रयोगों के साथ मन्त्र शक्ति एवं प्राण शक्ति का प्रयोग किया जाता रहा होगा। अथर्ववेद के रोहिणी वनस्पति सूक्त के प्रथम मन्त्र में टूटे अंगों को जोड़ने एवंजले –कटे घावों को भरने के लिए 'रोहिणी' नामक ओषधि का उल्लेख है ।

रोहिण्यसि रोहिण्यस्थनश्छिन्न रोहिणि । रोहयेदमरून्धत ॥

हे लाल वर्ण वाली रोहिणी! आप टूटी अस्थियों को पूर्णता प्रदान करने वाली हैं। हे अरून्धति! (उपचार के मार्ग में बाधा न आने देने वाली) आप इस (घाव आदि) को भर दें ।

५) गुग्गुल एवं जटामांसी

अथर्ववेद के चौथे काण्ड के कृमिनाशन सूक्त के तीसरे मन्त्र में गुग्गुल और जटामांसी का विवरण मिलता है ।

नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमश्वसम गुल्गुलुः पीला नलद्यौक्षगन्धिः प्रमोदिनी । तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन॥

जिस प्रकार नदी के पार उतरने की इच्छा वाले मनुष्य कुशल नाविक के पास चले जाते हैं, उसी प्रकार गुग्गुल, पीलू, नलदि, औक्षगंधी और प्रमोदिनी आदि औषधियों के हवन से भयभीत होकर अप्सराएं (जल से उत्पन्न कृमि) वापस लौटकर अपने निवास स्थान पर चली जाएँ और गतिहीन होकर पड़ी रहे ।

औषधियों में गुग्गुल को सब जानते हैं। पिला –पीलू को हिंदी में 'झल' कहते हैं। नलद=नल्दी को मांसी या जटामांसी कहते हैं। औक्षगंधी जटामांसी का ही एक भेद है, जिसे गन्धमांसी कहते हैं।प्रमोदिनी को घात की वृक्ष या 'घबई' कहा जाता है ।

निष्कर्ष

वनस्पति समस्त जीव जंतुओं के लिए प्रकृति का अमूल्य उपहार है । वनस्पति मानव समाज के लिए प्रगति एवं आर्थिक विकास हेतु एक मुख्य आधार प्रदान करते है । किन्तु दिन–दूनी और रात–चौगुनी बढ़ती हुई जनसँख्या की आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए वनस्पतियों की कटाई तथा उनका अनियंत्रित विदोहन होने के कारण वनस्पति बर्बादी के कगार पर पहुँच गए है। वनस्पति की इस प्राकृतिक धरोहर को हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रखना है ।

तमोषधीश्च वनिनश्च गर्भ भूमिश्च विश्वधायस विभर्ति ।

सत्य तो यह है कि वनस्पति जगत पृथ्वी का आवरण है ।वृक्षों को काटने का अर्थ है पृथ्वी की आयु को कम करना।जालों के किनारे खड़े वृक्षों को उखाडने का निषेध ऋग्वेद के मरूत सूक्त (५.५४.६.)में किया गया है ।

यजुर्वेद के बारहवें अध्याय में ओषधि गुणयुक्त वनस्पतियों के उपयोग के साथ साथ उनके विकास के लिए भी प्रेरित किया गया है ।

दीर्घायुस्तऽ ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥

ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के १५ वें सूक्त में प्रकृति एवं पर्यावरण के संतुलन की बात कही गयी है ।

प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजानग्ने त्वं रोदसी नः सुदोधे।
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परिष्ठात् ॥

हे अभीष्ट वर्षा में सामर्थ्य अग्निदेव आप हमें पूर्णता प्रदान करें और विविध अन्नों से पुष्ट करें। उत्तम दीप्तियों से दीप्तमान होकर आप देवों के साथ पृथ्वी को उत्तम दोहन योग्य बनायें। अन्यान्य मनुष्यों की दुर्बुद्धि हमारे निकट भी न आये ।

ऋग्वेद में वृक्षों का रक्षण ही नहीं अपितु नवीन वृक्षों को लगाए जाने की प्रेरणा भी हमें वैदिक मन्त्रों से मिलती है ।

अर्थात वेदों से भी हमें यही ज्ञान मिलता है की हम वनस्पतियों का उतना ही उपयोग करें जितने की हमें जरूरत है। ताकि हमारे बाद की पीढ़ी के उपयोग के लिए भी रह सके। वनस्पतियों की ओषधि रूप में उपयोग वैदिक कसल से चली आ रही है। हमारे वैदिक ऋषि वनस्पतियों के उपयोग के साथ उसके संरक्षण की बात भी करते हैं ।

सन्दर्भ

1. शर्मा श्रीराम, अथर्ववेद संहिता, मथुरा, प्रकाशक युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, २००५
2. शर्मा श्रीराम, यजुर्वेद संहिता, हरिद्वार,प्रकाशक ब्रम्हवर्चस, शांतिकुंज, २००१

3. शर्मा श्रीराम, ऋग्वेद संहिता भाग –१, हरिद्वार, प्रकाशक ब्रम्हवर्चस, शांतिकुंज, २००१
4. शर्माश्रीराम, ऋग्वेद संहिता, भाग–२, हरिद्वार, प्रकाशक ब्रम्हवर्चस, शांतिकुंज, २००१
5. अथर्ववेद ६/१५/१
6. अथर्ववेद ४/१५/१
7. अथर्ववेद १/२३/1
8. अथर्ववेद१/२३/३
9. अथर्ववेद १/२४/४
10. अथर्ववेद ४/३७/४
11. अथर्ववेद ४/१२/१
12. अथर्ववेद २/८/३
13. अथर्ववेद ४/३७/३
14. अथर्ववेद ३/६/१
15. अथर्ववेद८/७/१७
16. एतरेयोपनिषद २/१
17. यजुर्वेद १६/३४
18. यजुर्वेद१२/८६
19. यजुर्वेद१२/७७
20. यजुर्वेद१२/७५
21. यजुर्वेद२१/२१
22. यजुर्वेद२८/१०
23. यजुर्वेद १/२१
24. यजुर्वेद १२/१००
25. यजुर्वेद ६/३६
26. यजुर्वेद १६/१८,१६,२०,३४
27. ऋग्वेद१/१६/६
28. ऋग्वेद ३/८/४
29. ऋग्वेद ३/१५/६
30. ऋग्वेद ५/५४/६
31. ऋग्वेद ६/४८/१७
32. ऋग्वेद ५/७४/६